PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Business Bhaskar, Faridabad
Thursday 20th February 2014, Page: 1
Width: 12.85 cms, Height: 15.39 cms, a4, Ref: pmin.2014-02-20.62.8

बल्क ड्रग पॉलिसी जल्द

चीन पर घरेलू उद्योग की निर्भरता कम करना मकसद

महेंद्र सिंह ▶ **नई दिल्ली...**

बल्क ड्रग के लिए चीन पर घरेलू उद्योग की निर्भरता कम करने के लिए केंद्र सरकार बल्क ड्रग पॉलिसी लाने की तैयारी कर रही है। इसके तहत घरेलू बल्क ड्रग इंडस्ट्री में नई जान फूंकने के लिए इन्फ्रास्ट्रक्चर स्थापित करने और कीमतों को तार्किक बनाने के प्रावधान किए जाएंगे। इससे घरेलू दवा उद्योग को मजबूत करने में भी मदद मिलेगी।

डिपार्टमेंट ऑफ फार्मास्युटिकल की सेक्रेटरी आराधना जौहरी ने 'बिजनेस भास्कर' को बताया कि बल्क ड्रग पॉलिसी के तहत हम एक ऐसा रास्ता निकालना चाहते हैं जिससे दवा कंपनियों को बल्क ड्रग वाजिब कीमत पर मिले और बल्क ड्रग बनाने वाली यूनिट भी मुनाफा कमा सकें। बल्क ड्रग बनाने वाली यूनिट से बड़े पैमाने पर प्रदूषण होता है और इसके लिए बिजली आपूर्ति व्यवस्था भी बेहतर होनी चाहिए। इसके लिए क्लस्टर आधारित एप्रोच कारगर हो सकती है। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में हमारा दवा उद्योग बल्क ड्रग के लिए बड़े पैमाने पर चीन और यूरोप पर निर्भर है। घरेलू दवा उद्योग के लिए लंबी अवधि के लिहाज से यह निर्भरता अच्छी नहीं है। ऐसे में घरेलू बल्क ड्रग इंडस्ट्री को पुनर्जीवित करने के लिए हम बल्क ड्रग पॉलिसी लाने पर विचार कर रहे हैं। हम इसके लिए दवा उद्योग और दूसरे भागीदारों से बातचीत कर रहे हैं। घरेलू दवा उद्योग की बल्क ड्रग के लिए चीन पर व्यापक निर्भरता के पीछे कीमत एक बड़ी वजह है।

क्या होना है

पॉलिसी के तहत घरेलू बल्क ड्रग इंडस्ट्री में नई जान फूंकने के लिए इन्फ्रास्ट्रक्चर स्थापित करने व कीमतों को तार्किक बनाने के प्रावधान किए जाएंगे

क्या फायदा

- दवा कंपनियों को वाजिब कीमतों पर मिल सकेंगी बल्क ड्रग्स
- बल्क ड्रग बनाने वाली यूनिट भी कमा सकेंगी मुनाफा

चीन से आयातित बल्क ड्रग दरअसल घरेलू बल्क ड्रग की तुलना में काफी सस्ती पड़ती है। ऐसे में घरेलू बल्क ड्रग इंडस्ट्री को चीन से प्रतिस्पर्धा करने के लायक बनाना एक बड़ी चुनौती है। जौहरी के मुताबिक हमने बल्क ड्रग इंडस्ट्री को पुनर्जीवित करने के मकसद से ही क्लस्टर डेवलपमेंट प्रोग्राम शुरू किया है। इसके तहत किसी खास जगह पर एक कॉमन फैसिलिटी सेंटर स्थापित किया जा सकता है और दवा बनाने वाली तमाम कंपनियां इस सेंटर की सेवाएं हासिल कर सकेंगी। क्लस्टर आधारित एप्रोच से दवा कंपनियों को कम कीमतों में आधुनिक सुविधाएं मुहैया कराने में मदद मिलेगी।

हाल ही में प्रधानमंत्री कार्यालय ने भी एक नोट भेज कर घरेलू ड्रग इंडस्ट्री की बल्क ड्रग के लिए चीन पर निर्भरता को लेकर चिंता जताई थी। जेनरिक दवा निर्माता जगदीप सिंह का कहना है कि नब्बे के दशक में घरेलू बल्क ड्रग इंडस्ट्री कमजोर होनी शुरू हुई और मौजूदा समय में 80% तक बल्क ड्रग का आयात चीन से होता है। जेनरिक दवाओं के बाजार में भारत के प्रभुत्व को देखते हुए चीन भविष्य में हमारी निर्भरता का फायदा उठा कर हमें मनमानी कीमतों पर बल्क ड्रग खरीदने के लिए मजबूर कर सकता है। ऐसे में केंद्र सरकार को घरेलू बल्क ड्रग इंडस्ट्री को नए सिरे से खड़ा करने का प्रयास करना चाहिए।